



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरूक	19-10-23	4	6-8

आलू की नई किस्म एमएसपी 16-307 व कुफरी सुख्याति ईजाद की, अधिक पैदावार का दावा उत्तरी, मध्य और पूर्वी मैदानी इलाकों के लिए ये किस्में बेहतर बताई गईं

भास्कर नूजा | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 41वीं अखिल भारतीय सम्मिलित आलू अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय कार्यशाला के तीसरे व अंतिम दिन आलू की दो नई किस्मों को देश के विभिन्न क्षेत्रों में खेती के लिए जारी करने की अनुशंसा की गई। परियोजना के अंतर्गत एमएसपी 16-307 और कुफरी सुख्याति शामिल हैं। यह दोनों अधिक पैदावार देने वाली किस्में हैं और इनकी भंडारण क्षमता अधिक है। समापन सत्र की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक महानिदेशक फूल-सब्जों-मसाले और औषधीय पौधे डॉ. सुधाकर पांडे ने की। एचएयू के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा सह-अध्यक्ष के रूप में उपस्थित रहे।

सहायक महानिदेशक सुधाकर पांडे ने वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए भारत में आलू प्रसंस्करण में भारतीय किस्मों को हिस्सेदारी बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि आलू अनुसंधान में सटीक कृषि के लिए जैविक व अजैविक दबाव सहिष्णुता, पूर्वानुमान मॉडल और जलवायु परिवर्तन परिदृश्य में उत्पादन और उत्पादकता में सुधार लाना आवश्यक है। नवीन फसल

75 व 90 दिन में खुदाई के लिए हो जाती हैं तैयार



हिसार | एचएयू में आयोजित कार्यशाला को संबोधित करते हुए सहायक महानिदेशक डॉ. सुधाकर पांडे।

एमएसपी 16-307 किस्म की विशेषता है कि इसके अलग व गुदा बैंगनी रंग के हैं। यह 90 दिन में खुदाई के लिए तैयार हो जाती है। कुफरी सुख्याति किस्म केवल

75 दिन में खुदाई के लिए तैयार हो जाती है। इन किस्मों को देश के उत्तरी, मध्य और पूर्वी मैदानी इलाकों के लिए जारी करने की सिफारिश की गई है।

सुधार और उत्पादन प्रौद्योगिकियों को लागू कर व उत्पादकता अंतराल को कम करके उत्पादन में सुधार लाया जा सकता है।

अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने बायो-फोर्टिफाइड व पीणग को दृष्टि से बेहतर आलू की किस्मों का विकसल करने पर बल दिया। कार्यशाला के दौरान

आयोजित विभिन्न सत्रों में देश के विभिन्न राज्यों के 25 अखिल भारतीय सम्मिलित आलू अनुसंधान परियोजना केंद्रों से आए वैज्ञानिकों ने आलू की पैदावार बढ़ाने, उन्नत किस्में, भंडारण, खाद्य सुरक्षा सहित नवाचारों से संबंधित विषयों पर मंथन किया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उमर उजाला	19-10-23	2	2-4

एमएसपी 16-307 और कुफरी सुख्याति की भंडारण क्षमता और पैदावार ज्यादा

एचएयू में आलू अनुसंधान परियोजना की कार्यशाला में दो नई किस्मों को मिली स्वीकृति

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) में आयोजित 41वाँ अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय कार्यशाला के अंतिम दिन आलू की दो नई किस्मों की अनुसंधान जारी की गई। एमएसपी/16-307 और कुफरी सुख्याति दोनों अधिक पैदावार और अधिक भंडारण क्षमता वाली किस्में हैं। एमएसपी/16-307 किस्म की विशेषता है कि इसके आलू व गुद्दा बैंगनी रंग के हैं। यह 90 दिन में जबकि कुफरी सुख्याति किस्म मात्र

75 दिन में खोदाई के लिए तैयार हो जाती है। इन किस्मों को देश के उत्तरी, मध्य और पूर्वी मैदानों इलाकों के लिए जारी करने की सिफारिश की गई है।

समापन सत्र की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक महानिदेशक (फूल-सब्जी-मसाले और औषधीय पौधे) डॉ. सुधाकर पांडे ने कहा कि भारत में आलू प्रसंस्करण में भारतीय किस्मों की हिस्सेदारी बढ़ानी होगी। आलू अनुसंधान में सटीक कृषि के लिए जैविक व अजैविक दबाव सहिष्णुता, पूर्वानुमान मॉडल और जलवायु परिवर्तन परिदृश्य में उत्पादन और उत्पादकता में सुधार लाना

आवश्यक है। नवीन फसल सुधार और उत्पादन प्रौद्योगिकियों को लागू कर व उत्पादकता अंतराल को कम करके उत्पादन में सुधार लाया जा सकता है।

अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने बदलते परिदृश्य में फसल सुधार, फसल सुरक्षा और सत्यापन को महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने वायो-फोर्टिफाइड व पोषण की दृष्टि से बेहतर आलू की किस्मों का विकास करने पर बल दिया। इस अवसर पर शिमला के निदेशक डॉ. वृजेश सिंह, डॉ. एसके तेहलान, डॉ. पीएस नायक, डॉ. बीपी सिंह, डॉ. वीके बत्रा, डॉ. एके भाटिया, डॉ. केएस बसवाना मौजूद रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	19-10-23	3	6-8

आलू की 2 नई किस्मों को मिली स्वीकृति

अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना की कार्यशाला संपन्न



हिसार, 18 अक्टूबर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित 41वीं अखिल

भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना की 3 दिवसीय कार्यशाला के तीसरे दिन आलू की दो नई किस्मों को देश के विभिन्न क्षेत्रों में खेती के लिए जारी करने की अनुशंसा की गई। उपरोक्त परियोजना के अंतर्गत एम.एस.पी/16-307 और कुफरी सुखवाति शामिल हैं।

यह दोनों अधिक पैदावार देने वाली किस्में हैं तथा इनकी भंडारण क्षमता भी अधिक है। एम.एस.पी/16-307 किस्म की विशेषता है कि इसके आलू व गुद्दा बैंगनी रंग के हैं और यह 90 दिन में खुदाई हेतु तैयार हो जाती है, जबकि कुफरी सुखवाति किस्म मात्र 75 दिन में खुदाई के लिए तैयार हो जाती है। इन किस्मों को देश के उत्तरी, मध्य और पूर्वी मैदानी इलाकों के लिए जारी करने की सिफारिश की गई है। समापन सत्र की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक महानिदेशक (फूल-सब्जी-मसाले और औषधीय पौधे) डा. सुधाकर पांडे ने की, जबकि हकूबि के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा सह-अध्यक्ष के

संघ से सहायक महानिदेशक डा. सुधाकर पांडे संबोधित करते हुए।

रूप में उपस्थित रहे।

सहायक महानिदेशक डा. सुधाकर पांडे ने इस अवसर पर वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए भारत में आलू प्रसंस्करण में भारतीय किस्मों की हिस्सेदारी बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि आलू अनुसंधान में सटीक कृषि के लिए जैविक व अजैविक रक्षा सहिष्णुता, पूर्वानुमान मॉडल और जलवायु परिवर्तन परिदृश्य में उत्पादन और उत्पादकता में सुधार लाना आवश्यक है।

अनुसंधान निदेशक डा. जीतराम शर्मा ने बायो-फोर्टिफाइड व पोषण की दृष्टि से बेहतर आलू की किस्मों का विकास करने पर बल दिया। कार्यशाला के दौरान आयोजित विभिन्न सत्रों में देश के विभिन्न राज्यों के 25 अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना केंद्रों से आए वैज्ञानिकों ने आलू की पैदावार बढ़ाने, उन्नत किस्मों, भंडारण, खाद्य सुरक्षा सहित नवचारों से संबंधित विषयों पर मंचन किया गया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	19-10-23	3	2-8

आलू की दो नई किस्मों को मंजूरी, उत्तरी, मध्य और पूर्वी मैदानी इलाकों में कर सकेंगे खेती

जयपुर संवाददाता, हिंसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित 41वीं अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय कार्यशाला सम्पन्न हुई। इसमें आलू की दो नई किस्मों को देश के विभिन्न क्षेत्रों में खेती के लिए जारी करने की अनुमति को रखा। इसमें एमएससी/16-307 और कुफरी सुखशक्ति शामिल हैं। ये दोनों अधिक पैदावार देने वाली किस्में हैं तथा इनकी भंडारण क्षमता भी अधिक है। एमएससी/16-307 किस्म की विशेषता है कि इसके आलू व गुदा बैंगनी रंग के हैं और यह 90 दिन में खुदाई हेतु तैयार हो



मेर से सहायक महानिदेशक (फल-सब्जी-मसाले और औषधीय पौधे) डा. सुधाकर पांडे (द्वितीय सेना) के अध्यक्षता में आयोजित बैठक में भाग ले रहे हैं।

जाती है। जबकि कुफरी सुखशक्ति किस्म मात्र 75 दिन में खुदाई के लिए तैयार हो जाती है। इन किस्मों को देश के उत्तरी, मध्य और पूर्वी मैदानी इलाकों के लिए जारी करने की सिफारिश की गई है। कार्यालय के समाप्ति समारोह की अध्यक्षता

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक महानिदेशक (फल-सब्जी-मसाले और औषधीय पौधे) डा. सुधाकर पांडे ने की, जबकि शकुंति के अनुसंधान निदेशक डा. जीतराम शर्मा सह-अध्यक्ष के रूप में उपस्थित रहे।

• स्वीकृत किस्म एमएससी/16-307 और कुफरी सुखशक्ति भंडारण क्षमता अधिक व पैदावार बढ़ाने में सहायक

• इसी में 41वीं अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय कार्यशाला आयोजित

आलू प्रसंस्करण में भारतीय किस्मों की हिरसंदारी बढ़ाने पर दिया जोर

डा. सुधाकर पांडे ने भारत में आलू प्रसंस्करण में भारतीय किस्मों की हिरसंदारी बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि आलू अनुसंधान में सटीक कृषि के लिए जैविक व अजैविक दबाव सहिष्णुता, पूर्वानुमान मांडल और जलवायु परिवर्तन परिरक्षण में उत्पादन और उत्पादकता में सुधार लाना आवश्यक है। उन्होंने कहा नवीन फसल सुधार और उत्पादन प्रौद्योगिकियों को लागू कर व उत्पादकता अंतराल को कम करके उत्पादन में सुधार लाया जा सकता है। उन्होंने

देश के विभिन्न क्षेत्रों में आलू के गुणवत्तापूर्ण बीज की आवश्यकता को कम करने के लिए बीज उत्पादन को प्राथमिकता तथा आलू की पैदावार व गुणवत्ता बढ़ाने के लिए नवाचारों से जुड़ने के लिए आह्वान किया। अनुसंधान निदेशक डा. जीतराम शर्मा ने बदलते परिदृश्य में फसल सुधार, फसल सुरक्षा और सतृप्तन व रिलीज के लिए फसल उत्पादन के लक्ष्य विभिन्न प्रौद्योगिकियों के बहु-स्तर मूल्यांकन में उपरोक्त परियोजना को महत्वपूर्ण बताया।

25 अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना केंद्रों से आए वैज्ञानिक

कार्यशाला के दौरान आयोजित विभिन्न सत्रों में देश के विभिन्न राज्यों के 25 अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना केंद्रों से आए वैज्ञानिकों ने आलू की पैदावार बढ़ाने, उन्नत किस्मों, भंडारण, खाद्य सुरक्षा सहित नवाचारों से संबंधित विषयों पर मसला किया। इस अवसर पर केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान शिमला के निदेशक डा. बुजेंद्र सिंह, सब्जी विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष एवं बैठक के आयोजन सचिव डा. परमेश कुमार, भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान वाराणसी के पूर्व निदेशक डा. फौरस नायक, केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान शिमला के पूर्व निदेशक डा. शीरी सिंह, विश्वविद्यालय सब्जी विज्ञान विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष डा. वीके बना, डा. एके भाटिया एवं डा. केएस बरमाना आदि मौजूद रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि. भूमि	19-10-22	9	1-8

41वीं अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय कार्यशाला में मिली स्वीकृति

आलू की दो नई किस्मों को मिली स्वीकृति, मंडारण क्षमता अधिक व पैदावार बढ़ाने में सहायक

हरिकृषि एवं भांडार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित 41वीं अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय कार्यशाला के तीसरे व अंतिम दिन बुधवार को आलू की दो नई किस्मों को देश के विभिन्न क्षेत्रों में खेती के लिए जारी करने की अनुमति मिली है। उपरोक्त परियोजना के अंतर्गत एफएचसी/16-307 और कृष्णो मूलप्रजाति काविल है। यह दोनों अधिक पैदावार देने वाली किस्में हैं तथा इनकी मंडारण क्षमता भी अधिक है।



हिसार। नए से सहायक महानिदेशक (फल-सब्जी) सरस्वती और डी.एस.पी. आर. सुखकर 188 सदस्यों को संबोधित करते हुए।

इसके आलू व गुठल बैंगनी रंग के हैं और यह 90 दिन में खुर्राई के लिए तैयार हो जाती है, जबकि कृष्णो मूलप्रजाति किस्म मात्र 75 दिन में खुर्राई के लिए तैयार हो जाती है। इन किस्मों को देश के उत्तरी, मध्य और पूर्वी पैदायी इलाकों के लिए

जारी करने की सिफारिश की गई है। सम्मान सत्र की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महासचिव महानिदेशक (फल-सब्जी-भांडार) और अध्यक्षीय पौधे) डॉ. सुखकर साहू ने की, जबकि सहसचिव के अनुसंधान निदेशक डॉ. जगतपाल शर्मा

भारत में आलू प्रसस्करण में भारतीय किस्मों की हिस्सेदारी बढ़ाने पर जोर

उत्कृष्ट महानिदेशक (फल-सब्जी-भांडार) और अध्यक्षीय पौधे) डॉ. सुखकर साहू ने इस अवसर पर किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि आलू प्रसस्करण में अल्पसे किस्मों की हिस्सेदारी बढ़ाने पर जोर दिया जायेगा ताकि आलू उत्पादन में स्वदेशी कृषि के लिए अधिक व अधिकतम पैदावार बढ़ाने में सहायक हो सके।

यह रहे उपस्थित

इस अवसर पर केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, तिमना के निदेशक डॉ. इंदुला मिश्र, राष्ट्रीय विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष एवं सचिव के अजीत कुमार शर्मा, डॉ. परमेश्वर, तिमना सहित

उत्कृष्टा, पूरनसुख मंडार और उत्कृष्टा परिचरि परियोजना में उपस्थित और उपस्थित डॉ. सुभाष शर्मा (अध्यक्ष) और अन्य विज्ञान विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. शक्ति शर्मा, डॉ. एन. सी. शर्मा, डॉ. जगतपाल शर्मा सहित अन्य वैज्ञानिकों की मौजूदगी थी।

भारतीय समन्वित अनुसंधान संस्थान, बालासोरी के पूर्व निदेशक डॉ. पी.एस. नायक, केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, तिमना के पूर्व निदेशक डॉ. बी.पी. सिंह, विभागाध्यक्ष राष्ट्रीय विज्ञान विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. शक्ति शर्मा, डॉ. एन. सी. शर्मा, डॉ. जगतपाल शर्मा सहित अन्य वैज्ञानिकों की मौजूदगी थी।

वैज्ञानिकों ने आलू की पैदावार बढ़ाने पर किया जोर

उत्कृष्टा परियोजना डॉ. जगतपाल शर्मा ने कहा कि परियोजना में फसल सुधार, पैदावार सुधार और उत्पादन व निर्यात के लिए किसानों को प्रशिक्षण देना महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि किसानों को अधिक पैदावार बढ़ाने में सहायक हो सके। उन्होंने कहा कि किसानों को अधिक पैदावार बढ़ाने में सहायक हो सके। उन्होंने कहा कि किसानों को अधिक पैदावार बढ़ाने में सहायक हो सके।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक प्रबुध	19-10-23	10	6-7

आलू की दो नई किस्मों को मिली मंजूरी

हिसार, 18 अक्टूबर (भा)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित 41वीं अखिल भारतीय सम्मिलित आलू अनुसंधान परिषद की तीन दिवसीय कार्यशाला के आज तीसरे व अंतिम दिन आलू की दो नई किस्मों को देश के विभिन्न क्षेत्रों में खेती के लिए जारी करने की अनुमति दी गई। उपरोक्त परिषद की अंतर्गत एम.एस.पी/16-307 और कुफरी सुखी किस्म शामिल हैं। यह दोनों अधिक पैदावार देने वाली किस्में हैं तथा इनकी भंडारण क्षमता भी अधिक है।

एम.एस.पी/16-307 किस्म की विशेषता है कि इसके आलू व गुच्छ बैंगनी रंग के हैं और यह 90 दिन में खुदाई हेतु तैयार हो जाती है, जबकि कुफरी सुखी किस्म मात्र 75 दिन में खुदाई के लिए तैयार हो जाती है। इन किस्मों को देश के उत्तरी, मध्य और पूर्वी मैदानी इलाकों के लिए जारी करने की सिफारिश की गई है। समापन सत्र की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक महानिदेशक (फूल-सब्जी-मसाले

और औषधीय पीधे) डॉ. सुधाकर पांडे ने की, जबकि हकूवि के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा सह-अध्यक्ष के रूप में उपस्थित रहे। सहायक महानिदेशक डॉ. सुधाकर पांडे ने इस अवसर पर भारत में आलू प्रसंस्करण में भारतीय किस्मों की जिम्मेदारी बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि आलू अनुसंधान में सटीक कृषि के लिए जैविक व अजैविक दबाव सहिष्णुता, पूर्वानुमान मौडल और जलवायु परिवर्तन परिदृश्य में उत्पादन और उत्पादकता में सुधार लाना आवश्यक है। अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने बदलते परिदृश्य में फसल सुधार, फसल सुरक्षा और सत्यापन व रिलीज के लिए फसल उत्पादन के तहत विभिन्न प्रौद्योगिकियों के बहु-स्थान मूल्यांकन में उपरोक्त परिषद की महत्वपूर्ण भूमिका बतायी। कार्यशाला के दौरान विभिन्न राज्यों के 25 अखिल भारतीय सम्मिलित आलू अनुसंधान परिषदों के सदस्यों से आलू की पैदावार बढ़ाने, उन्नत किस्मों, भंडारण, खाद्य सुरक्षा सहित नवाचारों से संबंधित विषयों पर मंचन किया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	18-10-23	4	3-8

कार्यशाला • एचएयू में 4वीं अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना की वार्षिक कार्यशाला में वैज्ञानिकों ने रखे सुझाव आलू में पत्ता मरोड़ वायरस बढ़ रहा, राजमा, गन्ना और दलहनी फसलों की इंटर क्रॉपिंग के जरिये किसान बढ़ा सकते हैं आय

भारत न्यूज़ | हिंसा

25 भारतीय कृषि परिषद परियोजना केंद्रों से आए वैज्ञानिक

उत्तर भारत में आलू की फसल में पत्ता मरोड़ वायरस का प्रकोप बढ़ रहा है। आलू में किस्मों तरह के पेस्टीसिड्स का प्रयोग करने की बजाय इंटर क्रॉपिंग के जरिये इस वायरस को नियंत्रित किया जा सकता है। आलू के साथ राजमा, गन्ना और दलहनी फसलों लगाकर इस वायरस को काफी हद तक काबू कर सकते हैं। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में चल रही तीन दिवसीय 41वीं अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना की वार्षिक कार्यशाला में वैज्ञानिकों ने सुझाव रखा। वर्कशॉप में उत्तर भारत में होने वाली प्रमुख सब्जियों की आलू फसल में पत्ता मरोड़ रोग काफी कमिन पाया गया। इसको नियंत्रित करने को लेकर वर्कशॉप में चर्चा हुई, जिसमें इंटर क्रॉपिंग के जरिए इस पर रोकथाम का बेस्ट तरीका बताया गया।

• इंटर क्रॉपिंग यानि दो तरह की फसलें एक साथ लेकर आलू को लीफ रोल वायरस से बचाया जा सकता है। दूसरी फसल साथ लेकर किसान कम जमीन में ज्यादा आमदनी भी ले सकता है। इससे किसान की इनकम भी डबल हो सकती है। राजमा, गन्ना या दलहनी फसलों से मिट्टी के पोषक तत्व बने

रहते हैं। इसके कारण आलू में पत्ता मरोड़ रोग नहीं आता और किसान को होने वाले फसल के नुकसान से बचाया जा सकता है।
• वर्कशॉप के दूसरे दिन केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला के निदेशक डॉ. बृजेश सिंह और सीआईआरडीए के निदेशक डॉ. धीरे सिंह भी उपस्थित रहे। एचएयू के

सबजी विज्ञान विभाग और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्- केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा संयुक्त रूप से कार्यशाला आयोजित की जा रही है। इसमें देश के विभिन्न राज्यों के 25 भारतीय कृषि परिषद परियोजना केंद्रों से आए वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं।

प्रदेश के लिए वैरायटी बेस्ट

हरियाणा की जलवायु परिस्थितियों के लिए आलू की 16 किस्मों की सिफारिश की गई है, जिनमें से कुफरी बादशाह, कुफरी बाहार, कुफरी सतलज, कुफरी पूंकर और कुफरी पूंकराज सबसे अधिक उगाई जा रही किस्में हैं।

वर्कशॉप के दूसरे दिन दो सेशन में दी 22 प्रजेंटेशन

एचएयू सब्जी विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष एवं बैठक के आयोजन सचिव डॉ. एसके तेहलान ने बताया कि वर्कशॉप के दूसरे दिन कीट पतंग वाली बीमारियों और आलू की फसल को खाद, पानी अदि सस्य

क्रियाओं को लेकर दो सेशन हुए। कीट पतंग के लिए 10 प्रजेंटेशन और सस्य क्रियाओं के लिए 12 प्रजेंटेशन दी गई है। वर्कशॉप के अंतिम दिन नई वैरायटीज को लेकर चर्चा होगी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	18.10.2023	--	--

बुधवार, 18 अक्टूबर, 2023

3

स्वीकृत किम्म एम.एस.पी/16-307 और कुफरी सुखयाति भंडारण क्षमता अधिक व पैदावार बढ़ाने में सहायक हकृवि में आयोजित 41वीं तीन दिवसीय कार्यशाला में आलू की दो नई किस्मों को मिली स्वीकृति

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार, 18 अक्टूबर। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित 41वीं अखिल भारतीय सम्मेलित अन्तःअनुसंधान परिषदों को तीन दिवसीय कार्यशाला के आज दोसरे व अंतिम दिन आलू की दो नई किस्मों को देश के विभिन्न क्षेत्रों में प्रोत्साहित करने के लिए जारी करने की अनुमति की गई। उपरोक्त परिषदों के अंतर्गत एम.एस.पी/16-307 और कुफरी सुखयाति शामिल हैं। यह दो नई अधिक पैदावार देने वाली किस्में हैं तथा इनकी भंडारण क्षमता भी अधिक है। एम.एस.पी/16-307 किम्म की विशेषता है कि इसके आलू 4 व जुलाई के रंग के हैं और यह 90 दिन में सुदृढ़ हेतु तैयार हो जाती है जबकि कुफरी सुखयाति किम्म मात्र 75 दिन में सुदृढ़ के लिए तैयार हो जाती है। इन किस्मों को देश के उत्तरी, मध्य और पूर्वी मैदानी इलाकों के लिए जारी करने की सिफारिश की गई है। सम्मेलन सब की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक पर्यवेक्षक (कृषि-समन्वय-मसाले और औद्योगिक पौधे) डॉ. सुधाकर चंदि ने की, जबकि हकृवि के अनुसंधान निदेशक डॉ. जैहराम शर्मा सह-अध्यक्ष के रूप में उपस्थित रहे। सहायक पर्यवेक्षक (कृषि-समन्वय-मसाले और औद्योगिक पौधे) डॉ. सुधाकर चंदि ने इस अवसर पर वैज्ञानिकों



को संबोधित करते हुए भारत में अन्तः प्रसोकरण में भारतीय किस्मों को हिमालयीय बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि अन्तःअनुसंधान में राष्ट्रीय कृषि के लिए वैश्विक व अतिवैश्विक दृष्टि सहित, पूर्वानुमान योजित और जलवायु परिवर्तन परिदृश्य में उत्पादन और उपलब्धता में सुधार लाना आवश्यक है। उन्होंने कहा नवीन प्रकार के सुधार और उत्पादन प्रौद्योगिकियों को लागू कर व उपलब्धता में वृद्धि को कम करके उत्पादन में सुधार लाना जा सकता है। सहायक निदेशक ने देश के विभिन्न क्षेत्रों में आलू के सुगमलक्ष्यी बीज की आवश्यकता को कम करने के लिए बीज उत्पादन को प्रोत्साहित तथा आलू की

पैदावार व गुणवत्ता बढ़ाने के लिए गठबंधनों से जुड़ने के लिए आग्रह किया। अनुसंधान निदेशक डॉ. जैहराम शर्मा ने बदलते परिदृश्य में फसल सुधार, फसल सुरक्षा और संचयन व सिंचि के लिए फसल उत्पादन के सतत विभिन्न प्रौद्योगिकियों के बहु-समान सुसंगठन में उपयोग को प्रोत्साहित की। उन्होंने कृषि-सिद्धि-सिद्धि व पोषण की दृष्टि से बेहतर आलू की किस्मों का विकास करने पर जोर दिया। कार्यशाला के दौरान आयोजित विभिन्न सत्रों में देश के विभिन्न क्षेत्रों के 25 अखिल भारतीय सम्मेलित अन्तःअनुसंधान परिषदों के प्रतिनिधियों ने आलू की पैदावार बढ़ाने, उस किस्मों, पैदावार, खाद्य सुरक्षा सहित गठबंधनों से संबन्धित विषयों पर चर्चा किया। इस अवसर पर केंद्रीय अन्तःअनुसंधान समन्वय, सिन्धु के निदेशक डॉ. प्रकाश मिश्र, सभी विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष एवं पैदावार के अनुसंधान अधिकारी डॉ. एम.के.देवदत्त सहित भारतीय राष्ट्रीय अनुसंधान परिषद, राजस्थान के पूर्व निदेशक डॉ. पी.एस. शर्मा, केंद्रीय अन्तःअनुसंधान समन्वय, सिन्धु के पूर्व निदेशक डॉ. पी.पी. मिश्र, विश्वविद्यालय सभी विज्ञान विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. पी.के. बच्च, डॉ. ए.के. खेरिया एवं डॉ. के.एस. बलराज सहित अन्य वैज्ञानिकगण भी मौजूद रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
चिराग टाइम्स	18.10.2023	--	--

स्वीकृत किस्म एम.एस.पी/16-307 और कुफरी सुखयाति भंडारण क्षमता अधिक व पैदावार बढ़ाने में सहायक

हिसार (चिराग टाइम्स)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित 41वीं अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय कार्यशाला के आज तीसरे व अंतिम दिन आलू की दो नई किस्मों को देश के विभिन्न क्षेत्रों में खेती के लिए जारी करने की अनुशंसा की गई। उपरोक्त परियोजना के अंतर्गत एम.एस.पी/16-307 और कुफरी सुखयाति शामिल हैं। यह दोनों अधिक पैदावार देने वाली किस्में हैं तथा इनकी भंडारण क्षमता भी अधिक है। एम.एस.पी/16-307 किस्म की विशेषता है कि इसके आलू व गुद्द बंगनी रंग के हैं और यह 90 दिन में खुदाई हेतु तैयार हो जाती है, जबकि कुफरी सुखयाति किस्म मात्र 75 दिन में खुदाई के लिए तैयार हो जाती है। इन किस्मों को देश के उत्तरी, मध्य और



पूर्वी मैदानी इलाकों के लिए जारी करने की सिफारिश की गई है। समापन सत्र की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक महानिदेशक (फूल-सब्जी-मसाले और औषधीय पौधे) डॉ. सुधाकर पांडे ने की, जबकि हकूवि के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा सह-अध्यक्ष के रूप में उपस्थित रहे। सहायक महानिदेशक (फूल-सब्जी-मसाले और औषधीय पौधे) डॉ. सुधाकर पांडे ने इस अवसर पर वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए भारत में आलू प्रसंस्करण में भारतीय किस्मों की हिस्सेदारी बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि आलू

अनुसंधान में सटीक कृषि के लिए जैविक व अजैविक दबाव सहिष्णुता, पूर्वानुमान मॉडल और जलवायु परिवर्तन परिदृश्य में उत्पादन और उत्पादकता में सुधार लाना आवश्यक है। उन्होंने कहा नवीन फसल सुधार और उत्पादन प्रौद्योगिकियों को लागू कर व उत्पादकता अंतराल को कम करके उत्पादन में सुधार लाया जा सकता है। सहायक निदेशक ने देश के विभिन्न क्षेत्रों में आलू के गुणवत्तापूर्ण खोज की आवश्यकता को कम करने के लिए बीज उत्पादन को प्राथमिकता तथा आलू की पैदावार व गुणवत्ता बढ़ाने के लिए नवाचारों से जुड़ने के लिए आह्वान किया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	18.10.2023	--	--

अनुसंधान परियोजना की कार्यशाला में आलू की दो नई किस्मों को मिली स्वीकृति

स्वीकृत किस्म एम.एस.पी/16-307 और कुफरी सुखयाति पैदावार बढ़ाने में सहायक

सिटी पल्स न्यूज, हिंसा। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित 41वें अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय कार्यशाला के आज अंतिम दिन आलू की दो नई किस्मों को देश के विभिन्न क्षेत्रों में खेती के लिए जारी करने की अनुमति दी गई। उपरोक्त परियोजना के अंतर्गत एम.एस.पी/16-307 और कुफरी सुखयाति शामिल हैं। यह दोनों अधिक पैदावार देने वाली किस्में हैं तथा इनकी भंडारण क्षमता भी अधिक है। एम.एस.पी/16-307 किस्म की विशेषता है कि इसके आलू 90 दिन में खुदाई हेतु तैयार हो जाती है, जबकि कुफरी सुखयाति किस्म मात्र 75 दिन में खुदाई के लिए तैयार हो जाती है। इन किस्मों को देश के उत्तरी, मध्य और पूर्वी मैदानों इलाकों के लिए जारी करने की सिफारिश की गई है। सम्मानन सच की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक महानिदेशक डॉ. सुधाकर पांडे ने की,



जय से तलवारक महानिदेशक डॉ. सुधाकर पांडे संबोधित करते हुए।

ज्याकि हर्षिय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जौहरम शर्मा सह-अध्यक्ष के रूप में उपस्थित रहे।
डॉ. सुधाकर पांडे ने वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए भारत में आलू प्रसंस्करण में भारतीय किस्मों की हिस्सेदारी बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि आलू अनुसंधान में सटीक कृषि के लिए जैविक व अजैविक रक्षा महत्वपूर्ण, पूर्वानुमान मॉडल और जलवायु परिवर्तन परिदृश्य में उत्पादन और उत्पादकता में सुधार लाना आवश्यक है। नवीन

फसल सुधार और उत्पादन प्रौद्योगिकियों को लागू कर व उत्पादकता अंतराल को कम करके उत्पादन में सुधार लाना जा सकता है। सहायक निदेशक ने देश के विभिन्न क्षेत्रों में आलू के गुणवत्तापूर्ण बीज की आवश्यकता को कम करने के लिए बीज उत्पादन को प्राथमिकता तथा आलू की पैदावार व गुणवत्ता बढ़ाने के लिए न्यायधरो से जुड़ने के लिए आह्वान किया। अनुसंधान निदेशक डॉ. जौहरम शर्मा ने बदलते परिदृश्य में फसल सुधार, फसल सुरक्षा और

सहायन व सिंचन के लिए फसल उत्पादन के तहत विभिन्न प्रौद्योगिकियों के बहु-स्तर मूल्यांकन में उपरोक्त परियोजना को महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने बायो-फोर्टिफाइड व पोषण को फुल्ट से बेहतर आलू की किस्मों का विकास करने पर जोर दिया। विभिन्न राज्यों के 25 अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना केंद्रों से आठ वैज्ञानिकों ने आलू की पैदावार बढ़ाने, उन्नत किस्मों, भंडारण, खाद्य सुरक्षा सहित न्यायधरो से संबंधित विषयों पर संघन किया।